संपादकीय

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर साल 8 मार्च को विश्वभर में महिलाओं के सम्मान और न्याय के लिए मनाया जाता है। वर्तमान में महिलाओं ने अपनी न्याय की लड़ाई में काफी प्रगति की है और ये लड़ाई मात्र समाज से नहीं बल्कि खुद से भी है। खुद से लड़कर महिलाओं ने अपने सम्मान को समझा है और इस लड़ाई में महिलाओं ने पुरुषों की समान भागीदारी पाई है।

वर्ष 2022 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का ध्येय वाक्य था 'ब्रेक द बियास' और वर्ष 2023 का आदर्श वाक्य है 'इम्ब्रेस द इक्विटी' जिसका अर्थ है समानता को अपनाना। जबकि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2023 की थीम है, 'डिजिटऑल (DigitALL): इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी फॉर जेंडर इक्वेलिटी'। इसका उद्देश्य उन महिलाओं और लड़कियों की पहचान करना है जो प्रौद्योगिकी और डिजिटल शिक्षा की उन्नति में योगदान दे रही है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस वेबसाइट के अनुसार #Embrace Equality का मतलब है कि इस समानता को कहीं लिखने या बोलने की ज़रूरत नहीं है बल्कि इस समानता पर हमें विचार करने की ज़रूरत है और इस अधिकार के महत्व को हमें जानना बहुत ज़रूरी है। इसके साथ ही इस कैंपेन का सिग्नेचर पिक्चर है खुद को गले लगाना जिसका अर्थ है अपनी हिस्सेदारी को अपनाना।

ज़रा हम उस दुनिया की कल्पना करतें हैं जहाँ लिंगभेद नहीं है। ऐसा संसार जो पूर्वाग्रहों, स्टेरिओटाइप तथा भेदभाव विहीन है। ऐसी दुनिया जो विविधता से पूर्ण तथा समावेशी है, जहाँ मतभेदों को समझा जाता है। समानता का जश्न मनाया जाता है। कल्पना है और बहुत सुंदर कल्पना है और चाहती हूँ कि यह कल्पना साकार होकर इस धरती पर उतरें। किंतु जिस समाज के डीएनए में ही असमानता रही हो, जिसकी आधी आबादी में एक को कमजोर और दूसरे को शक्तिशाली, एक को उच्च और दूसरे को निम्न समझा जाता हो उस समाज का सर्वांगिण विकास कैसे हो सकता है? माना कि पुरानी मान्यताओं में, नारी की स्थिति में, पुरुष का नारी की ओर देखने के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया है। अधिकांश समाज के लोग अपनी बहू और बेटियों को शिक्षित करने के लिए अग्रसर भी हो रहे है। वह चाहते है कि उनकी बहू-बेटियाँ पढ़ लिखकर अपने साथ-साथ अपने परिवार का नाम रोशन करें और अपना भविष्य उज्जवल बनाएं। देश का भी नाम रौशन करें। आज महिलाएं अपनी हदों को लांघकर अपना उचित लक्ष्य प्राप्त कर भी रही हैं। किंतु जब प्रतिशत की बात आती है तो महिलाओं के हर क्षेत्र में होने का प्रतिशत बहुत कम है। पुरुषों का महिलाओं के प्रति देखने का नज़रिया भी बदल रहा है, सोच भी बदल रही है। किंतु दो चार लोगों की सोच बदलने भर से आमूलचूल परिवर्तन तो नहीं आएगा। धीरे-धीरे ही सही मगर पूरे समाज की सोच में बदलाव आना बहुत जरूरी है। यह काम कोई अकेला एक व्यक्ति नहीं कर सकता। इसके लिए सबको एक साथ जुड़कर आगे बढ़ना है। इसमें पुरुषों की भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। हम

सभी यह जानते हैं कि समाज में व्याप्त पूर्वाग्रहों को तोड़े बगैर एक समतामूलक, समावेशी और न्यायसंगत समाज का निर्माण नहीं हो सकता है। इसके लिए एक पूर्वाग्रह, रूढ़िवादिता और भेदभाव से मुक्त दुनिया की कल्पना की जा रही है जहाँ समानता एक जीवन मूल्य के रूप में समाज को निर्देशित करें और इसी समानता को गले लगाकर एक नए समाज का निर्माण हो। ऐसा समाज जहाँ हर दिन समानता का जश्न हो।

महिला दिवस पर मात्र एक ही दिन महिलाओं के सम्मान करना औचित्यपूर्ण नहीं है। एक महिला का संघर्ष एक दिन तक ही सीमित नहीं होता। उसे हर दिन नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए महिलाएं हर दिन सम्मान पाने की अधिकारी हैं। वस्तुत: अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस जागरूकता और प्रतिबद्धता का दिन है, भेदभाव को अस्वीकार करने और महिलाओं को एक समान क्षेत्र में लाने के लिए असमानता को दूर करने का दिन है, जहां प्रत्येक महिला सम्मानित, आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बन सके। वह एक ऐसी शक्ति हैं जो अर्थव्यवस्था को ऊपर उठाने में भी समान रूप से सक्षम हैं। मातृशक्ति के सशक्तिकरण से ही राष्ट्र की आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त हो सकता है इसलिए इस शक्ति का सम्मान करें, उसे गले लगाएं।

'आखर' परिवार की ओर से मैं समस्त महिलाओं को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की अशेष शुभकामनाएं देते हुए अंत में यही कहना चाहती हूँ कि,

"जिसकी तुम्हें तलाश है, खुद में ही वह आकाश है"।

'आखर' के इस अंक में शोधालेखों के साथ साथ धर्मेन्द्र सिंह की कविता ' क्या समृद्धि अभिमान का द्वार है', तथा प्रो. हूबनाथ जी की कविता 'आइए', डॉ. रेणु यादव की कहानी 'अपॉइंटमेंट', डॉ. अश्विनी की लघु कहानी 'पहचान', डॉ.डी.एस. चौगुले का कन्नड नाटक 'तबाही' तथा डॉ. ज्योति जिनेश्वरी का 'डॉ. मुक्ता से मुक्त बातें' नामक साक्षात्कार शामिल है। आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा। आपका स्नेह और सहयोग हमें हमेशा मिलता रहे ताकि हम **'आखर'** के माध्यम से साहित्य की सेवा कर सकें।

इति नमस्कारन्ते!

प्रधान संपादिका
प्रतिभा मुदलियार

****